मूल्य/धर्मार्थ : 1 पैसा
(केवल बहाईयों में वितरण हेतु)

बहाई समाचारपत्र

वर्ष : 53 अंक 8 प्रकाशन : प्रत्येक माह की 8 तारीख
अगस्त 2017 बहाई वर्ष : 174

विश्व न्याय मन्दिर

हमारे लिये यह स्थायी आनन्द का स्रोत है कि विश्वव्यापी बहाई समुदाय आत्म–संतोष के खतरों से बचने में सफल रहा है। वास्तव में, अपना विस्तार और सुगठन अच्छी तरह से इस समुदाय के हाथों में है। फिर भी, दुनिया भर में गाँवों और शहरों की विशाल संख्याओं के कार्यकलापों का प्रशासन करना–बहाउल्लाह की विश्व व्यवस्था के ध्वज को इतना ऊँचा उठाना कि सभी देख सकें – अब भी एक दूर का लक्ष्य है।

–28 दिसम्बर 2010

सिक्किम के राज्यपाल को द्वि–शताब्दी समारोह का निमंत्रण

सिक्किम की राज्य बहाई परिषद की ओर से सिक्किम बहाई समुदाय के पाँच प्रतिनिधि राज्यपाल श्रीनिवास पाटिल से राज भवन में 30 जून, 2017 को मिले और उन्हें इस तथ्य से अवगत कराया कि सिक्किम के बहाई समुदाय द्वारा समाज–कल्याण के लिये अनेक गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है; ये कार्यक्रम हर आयु वर्ग के लोगों के लिये हैं। मसलन, बच्चों के नैतिक विकास के लिये बहाई बाल कक्षायें, किशोरों और युवाओं के क्षमता–निर्माण के लिये किशोर आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम और वयस्कों के लिये स्टडी सर्कल। इन सभी कार्यक्रमों के तहत नैतिक और आध्यात्मिक विकास के निर्धारित पाठों की व्यवस्था है और इस तरह के कार्यक्रम दुनिया भर में बहाईयों द्वारा चलाये जा रहे हैं।

राज्यपाल को सूचित किया गया कि इस वर्ष अक्टूबर महीने में बहाई धर्म के संस्थापक बहाउल्लाह के जन्म की दो सौवीं वर्षगांठ पूरी दुनिया में मनाई जायेगी और सिक्किम में भी समारोह का आयोजन किया जायेगा, जिसके लिये वे राज्यपाल को आमंत्रित करने आये हैं और भारत के अन्य गणमान्य व्यक्तियों की तरह उनसे भी एक शुभकामना–संदेश की अपेक्षा करते हैं। राज्यपाल ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया है।

प्रतिनिधिमंडल में बहाई परिषद और गैंगटॉक की आध्यात्मिक सभा की सदस्या तथा बहाई स्कूल, तदौंग की प्रधानाचार्या श्रीमती रूपा देवी शर्मा, क्षेत्रीय बहाई परिषद की सचिव और गैगटॉक की आध्यात्मिक सभा की सदस्या सुश्री करिश्मा नायर, स्थानीय आध्यात्मिक सभा गैंगटॉक के सदस्य श्री सूरज लामा और सहायक मण्डल सदस्य सुश्री सृजना सुभा तथा श्री अर्जुन शामिल थे।



बहाई मित्रगण सिक्किम के राज्यपाल (मध्य में) के साथ

ज्ञातव्य है कि सिक्किम की भूमि पर प्रभुधर्म का संदेश सबसे पहले सन् 1951 में पायनीयर श्री उदय नारायण सिंह द्वारा दिया गया जब सिक्किम एक अलग राष्ट्र हुआ करता था और वहाँ राजतंत्र था। सन् 1968 में वहाँ राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा का गठन किया गया, लेकिन जब सिक्किम का विलय भारत के साथ किया गया तब यहाँ का बहाई समुदाय भारत की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा से मार्गदर्शन प्राप्त करने लगा।

इस अंक में

- सिक्किम के राज्यपाल को द्वि–शताब्दी समारोह का निमंत्रण....1
- भारतीय समुदाय के डॉ. काज़ेम समन्दरी की नेपाल के प्रधानमंत्री से मुलाकात....1
- मणिपुर में रक्तदान शिविर का आयोजन.1
- बिहार में "प्राथमिक शिक्षा में समुदाय की भूमिका" विषय पर व्याख्यान का आयोजन....2
- मणिपुर में स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के लिए संस्थागत सम्मेलन....2
- मध्यप्रदेश में 200 पौधों का रोपण किया..2
- बहाई विवाह....3
- बहाई विश्व केन्द्र में कार्यरत भारतीय उप–महाद्वीप के मित्रों की बैठक....4
- रोडू में प्रभुधर्म का संदेश....4

भारतीय समुदाय के डॉ. काज़ेम समन्दरी की नेपाल के प्रधानमंत्री से मुलाकात

भारतीय बहाई समुदाय के सदस्य डॉ. काज़ेम समन्दरी ने काठमांडु में 17 जुलाई 2017 को नेपाल के माननीय प्रधानमंत्री शेर बहादुर देउबा के साथ मुलाकात की।

यद्यपि यह उनकी निजी यात्रा थी, परन्तु इसने डॉ. समन्दरी को नेपाल भारत की अपनी अगली आधिकारिक यात्रा पर नई दिल्ली में बहाई उपासना मन्दिर के भ्रमण का निमंत्रण भी दिया।

भारत की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा द्वारा द्वि–शताब्दी के अवसर पर तैयार किए गए विशेष ब्रोशर की एक प्रति के साथ भारतीय समुदाय को



डॉ. काज़ेम समन्दरी नेपाल के माननीय प्रधानमंत्री को ''डॉनिंग प्लेस ऑफ दी रिमेम्ब्रन्स ऑफ गॉड'' भेंट करते हुए

के प्रधानमंत्री को "डॉनिंग प्लेस ऑफ दी रिमेम्ब्रन्स ऑफ गॉड" को भेंट करने का अवसर प्रदान किया और उन्होंने भारतीय बहाई समुदाय तथा भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा की ओर से शुभकामनाएं प्रेषित कीं। डॉ. समन्दरी ने माननीय प्रधानमंत्री को दिया गया भारत के महामहिम राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी का संदेश भी भेंट किया गया।

माननीय प्रधानमंत्री ने उल्लेख किया कि वह नेपाल में बहाई समुदाय की उपस्थिति से अवगत हैं।

मणिपुर में रक्तदान शिविर का आयोजन



क्षेत्रीय बहाई परिषद मणिपुर एवं मिजोरम द्वारा 9 जुलाई 2017 को महात्मा बाब के शहादत दिवस पर 17वें 'रक्तदान शिविर' का आयोजन किया गया, जिसमें 27 मित्रों ने आनन्दमय और उत्साहपूर्वक रक्तदान किया। ये सभी मित्रगण 21 से 47 वर्ष की आयुवर्ग के थे। छह युवा जो 23 से 26 आयुवर्ग के थे वे रक्तदान शिविर का समाचार पढ़कर रक्तदान करने के लिए आये, जिन्हें बहाउल्लाह का आरोग्यदायी संदेश देने का अवसर प्राप्त हुआ। स्थानीय आध्यात्मिक सभा, स्थानीय समुदाय और सहायक मण्डल सदस्यों के सहयोग से यह कार्यक्रम सफल हो सका।

बिहार में 'प्राथमिक शिक्षा में समुदाय की भूमिका' विषय पर व्याख्यान का आयोजन

बहाई प्रेरित सामाजिक संगठन 'सोसाइटी ऑफ़ यूनिवर्सल लर्नर' के कार्यक्रम संयोजक श्री संदीप कुमार मल्लिक के संयोजकत्व में बिहार के पटना संग्रहालय सभागार में ''प्राथमिक शिक्षा में समुदाय की भूमिका'' विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन 2 जुलाई, 2017 को किया गया, जिसकी अध्यक्षता सेवानिवृत्त वरिष्ठ आई. ए. एस. विजय प्रकाश एवं संचालन शिक्षाविद् श्री भैरवलाल दास ने किया।

कार्यक्रम की शुरूआत् भक्तिमय वातावरण में सुमधुर प्रार्थनाओं के साथ की गई। परिषद् सचिव, श्री ओम नमः शिवाय सिंह ने मित्रों का स्वागत किया तथा व्याख्यान की विषय–वस्तु को स्थापित करते हुए कहा कि हमारा यह अधम, नश्वर और क्षणभंगूर शरीर एक साधन है जबकि आत्मा साध्य है और इस शरीर एवं आत्मा में अधिक–से–अधिक जितने सौन्दर्य और जितनी सम्पूर्णता का विकास हो सकता है, उसे सम्पन्न व संपादित करना शिक्षा का उद्देश्य है। यह आत्मा के लिए उसी मानिंद है जिस मानिंद संगमरमर के लिए शिल्पकला। अस्तु, मनुष्य में जो सम्पूर्णता गुह्य रूप में विद्यमान है उसे प्रत्यक्ष, उजागर व प्रकट करना शिक्षा का कार्य है। श्री सिंह ने कहा कि इस चराचर संसार में जितने प्रकार की प्राप्तियाँ हैं, शिक्षा उनमें से सबसे बढ़कर है और यह तीन प्रकार की होती है। *प्रथम,* भौतिक शिक्षा जो सामान्य एवं नैसर्गिक होती है; *द्वितीय,* मानवीय शिक्षा जो बौद्धिक ज्ञान को आगे बढ़ाने में मदद करती है और *तृतीय,* आध्यात्मिक शिक्षा जिसके बिना हम आत्मा के विकास की कल्पना नहीं कर सकते। अतः हमें इन तीनों शिक्षाओं को एकीकृत व समन्वित रूप में आत्मसात् करनी चाहिए अन्यथा हमारी शिक्षा एकांगी एवं अधूरी होगी। श्री सिंह ने इस सम्पूर्ण शिक्षा को विकास के तीनों नायक व्यक्ति, संस्था एवं समुदाय के लिए अपरिहार्य एवं लाभकारी बताया।

व्याख्यान माला के आयोजनकर्ता सोल संयोजक ने भी पावर प्वांइट के माध्यम से लोगों को बताया कि उक्त संगठन बिहार के कुछ चयनित समुदाय–समूहों में सामुदायिक विद्यालय कार्यक्रम के माध्यम से बच्चों की प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण सेवा प्रदान कर रही है। इसके साथ ही मध्यप्रदेश, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़ और मणिपुर के भी विभिन्न समुदायों में इस कार्यक्रम को बढ़ावा दिया जा रहा है।

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित बहाई विश्व केन्द्र से आये अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार प्रवीण मल्लिक ने अपने उद्बोधन में कहा कि शिक्षा का विषय काफी वृहद् है, जिसकी अतल गहराईयों में हमें जाना होगा। उन्होंने वर्तमान प्रान्तीय शिक्षा व्यवस्था एवं शिक्षकत्व में हुए ह्रास को चिंता और चिंतन का विषय बताते हुए कहा कि भारत में सन् 1947 में मात्र 12 प्रतिशत लोग यथा– 4 करोड़ लोग ही साक्षर थे जबकि सम्प्रति, भारत में 74 प्रतिशत यथा– 98 करोड़ लोग साक्षर हैं जो अमेरिका की कुल आबादी का ढाई गुना है किन्तु, साक्षरता शिक्षा का प्रारंभिक स्तर है। वर्तमान शिक्षा की परिभाषा को संकीर्ण बताते हुए श्री मल्लिक ने कहा कि आज शिक्षा का उद्देश्य मात्र आर्थिक जरूरतों को पूरा करना हो गया है क्योंकि लोग आज अपने बच्चों को ईमानदार, निष्ठावान एवं चरित्रवान बनाने से ज्यादा तवज्ज़ो डॉक्टर एवं इंजीनियर बनाने पर दे रहे हैं। श्री मल्लिक ने कहा कि आज आवश्यकता है शिक्षा के क्षेत्र में मातृ–संस्कृति को शामिल करते हुए सामुदायिक विद्यालय की सहभागिता सुनिश्चित किये जाने हेतु अभिभावक एवं समुदाय को आगे आने की तभी शिक्षा भौतिक एवं आध्यात्मिक पोषण का कार्य करेगी तथा यह समानता, न्याय, एकता और परस्पर विश्वास को बढ़ावा देने वाली होगी।

मौके पर उपस्थित एस. सी. ई. आर. टी. बिहार सरकार के अन्तर्गत सेवारत व्याख्याता श्रीमती आभा रानी ने भी मित्रों को संबांधित करते हुए कहा कि शिक्षा, गरीबी, बेकारी एवं आर्थिक बदहाली दूर करने का सबसे बड़ा उपक्रम है, यह सामाजिक परिवर्तन का माध्यम तथा उन्नयन का

शेष पृष्ठ 4 पर



अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार प्रवीण मल्लिक सभा को संबोधित करते हुए

मणिपुर में स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के लिए संस्थागत सम्मेलन

मणिपुर के पनगनताबी और लंगाथेल समुदायों में स्थानीय आध्यात्मिक सभा के सदस्यों के लिए 25 जून 2017 को एक दिवसीय संस्थान सम्मेलन का आयोजन किया गया।

पनगनताबी में आयोजित कार्यक्रम में पाँच स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के 16 सदस्यों के अलावा 2 सहायक मण्डल सदस्य, 7 बच्चे, 2 युवाकिशोर और 4 युवा भी उपस्थित रहे। भक्तिपरक बैठक के बाद बहाई कक्षा की एक शिक्षिका द्वारा बच्चों को गीत और प्रार्थनायें सिखाई गईं एवं स्थानीय सभा के सदस्यों ने विश्व न्याय मन्दिर के 28 दिसम्बर 2010 संदेश के कुछ चुने हुए अनुच्छेदों का अध्ययन किया और उन पर परामर्श किया। ये देखा गया कि सभी प्रतिभागियों ने स्थानीय आध्यात्मिक सभा की भूमिका के महत्व और सदस्य होने के नाते अपने दायित्व का स्मरण किया। सभी ने यह वचन दिया कि कम से कम एक गतिविधि आरम्भ करेंगे, साथ ही, अपने क्षेत्र में शिक्षकों, अनुप्रेरकों या फिर ट्यूटरों की सहायता करेंगे। प्रतिभागियों ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि हमें अपने क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले सभी लोगों के बारे में सोचना चाहिए न कि केवल बहाईयों के बारे में ही। हमें अपने बच्चों को शिक्षित करना चाहिए, लेकिन उसके बाद पहले हमें अपने पड़ोस के बच्चों के बारे में भी सोचना चाहिए। स्थानीय आध्यात्मिक सभा को हमेशा संवेदनशील, सतर्क होना चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति को मूल–गतिविधियों में शामिल करने के लिए अनुयायियों को सहायता देने की संभावनाओं के बारे में सोचना और मार्ग तलाशने चाहिए। मित्रों ने आगामी तीन महीनों के लिए योजना भी बनाई।

लंगाथेल समुदाय में तीन स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के 14 सदस्यों ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज की। प्रार्थनाओं के बाद मित्रों ने इस विषय पर चर्चा की कि समय सीमा में हम अपना लक्ष्य कैसे प्राप्त कर सकते हैं। कोष सामग्री पर चर्चा करते समय मित्रों ने कहा कि हमें कोष में दान देना चाहिए चाहें कोई अमीर हो गया गरीब, उसका स्वरूप चाहें कुछ भी हो।

अध्ययन के दौरान समझ में आया कि स्थानीय आध्यात्मिक सभा को बढ़ते हुए विस्तार एवं दृढ़ीकरण, मूलगतिविधियों को गुणात्मक करने और उनकी देख–रेख करने हेतु स्वामित्व की जिम्मेदारी लेने के लिए आगे आने की जरूरत है। उपस्थित सभी मित्रों ने अगले तीन माह के लिए योजनायें भी बनाई।



पनगनताबी में आयोजित सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिभागी

मध्यप्रदेश में 200 पौधों का रोपण किया



भगवान बहाउल्लाह के 200वें जन्मोत्सव के आगमन के उपलक्ष्य में भोपाल के बहाई समुदाय द्वारा 30 जुलाई 2017 को बहाई भवन में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें विश्व बन्धुत्व में शांति एवं एकता, मानवजाति की एकता के लिए प्रार्थनाएँ की गईं एवं बहाउल्लाह के जीवन पर प्रकाश डाला। तदोपरांत बहाई समुदाय द्वारा भदभदा रोड स्थित बहाई गुलिस्तान में 200 पौधे रोपित किये गये।

बहाई विवाह

बहाई विवाह

प्रिय मित्रों, आपके जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि गुजरात में पिछले तीन महीनों के दौरान बारह बहाई विवाह हुए हैं, जिनका प्रकाशन हम बहाई समाचार में पृष्ठाभाव के कारण दो अंकों में करेंगे।



चिखली, गुजरात की श्रीमती उशाबेन और श्री अरविन्दभाई देशमुख के सुपुत्र श्री गणेश देशमुख का विवाह श्रीमती रमिलाबेन और श्री धरमूभाई अहीरे की सुपुत्री सुश्री भूमिती अहीरे के साथ बहाई विधिविधान से 9 अप्रैल 2017 को आहवा क्लस्टर के नंदनपेडा में सम्पन्न हुआ।



उमरकुई क्लस्टर की श्रीमती कुमुबेन और श्री रेवूभाई जाधव की सुपुत्री सुश्री भूमिका अहीरे का विवाह श्रीमती रत्नीबेन और श्री नातूभाई पवार के सुपुत्र श्री अवतार पवार के साथ 23 अप्रैल 2017 को बहाई विधिविधान से सम्पन्न हुआ।



उमरकुई क्लस्टर की श्रीमती सुर्ताबेन और श्री मधुभाई की सुपुत्री सुश्री लक्ष्मी का विवाह श्रीमती जोपीबेन और श्री बेजूभाई पवार के सुपुत्र श्री नीलेश पवार के साथ 23 अप्रैल 2017 को बहाई विधिविधान से सम्पन्न हुआ।



नानापाडा क्लस्टर की श्रीमती बुधीबेन और श्री चिंटूभाई राउत की सुपुत्री सुश्री शीला राउत का विवाह श्रीमती सुंदरबेन और श्री गोविंदभाई बिरारी के सुपुत्र श्री गौरांग बिरारी के साथ 6 मई 2017 को बहाई विधिविधान के अनुसार सम्पन्न हुआ।



गारखडी क्लस्टर की श्रीमती सोमीबेन और श्री पांडुभाई देशमुख की सुपुत्री सुश्री संगीता देशमुख का विवाह श्रीमती ताराबेन और श्रीमती शांतारामभाई वाडू के सुपुत्र श्री अनिल वाडू के साथ 14 मई 2017 को बहाई विधिविधान के अनुसार सम्पन्न हुआ।



सापुतारा क्लस्टर की श्रीमती प्रभाबेन और श्री जयप्रकाशभाई भोय के सुपुत्र श्री रमेश भोय का विवाह श्रीमती सविताबेन और श्री अवाजीभाई की सुपुत्री सुश्री मनीषा भोय के साथ 17 मई 2017 को बहाई विधिविधान के अनुसार सम्पन्न हुआ।

शेष क्रमशः

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204 | Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2015-16-17
New Delhi P.S.O. | Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2015-16-17

बहाई विश्व केन्द्र में कार्यरत भारतीय उप–महाद्वीप के मित्रों की बैठक

भारतीय उप–महाद्वीप से बहाई विश्व केन्द्र में सेवा दे रहे उप–महाद्वीप के कोई 25 मित्रों को पाँच सलाहकारों तथा किशोर आध्यात्मिक सशक्तिकरण से जुड़े लर्निंग साइट के दो परामर्शदाताओं से मिलने का सौभाग्य 10 जून 2017 को मिला।

प्रार्थनाओं के बाद एक सलाहकार महोदय ने यह बतलाया कि किस प्रकार कोई व्यक्ति अपने भावावेश को समझ सकता है, उसे सही दिशा दे सकता है और उसका उपयोग मानव–सेवा के कार्यों के लिये कर सकता है।

एक अन्य सलाहकार महोदय ने याद दिलाया कि विश्व केन्द्र में सेवा देने के दौरान व्यक्ति वापस जाकर अपने समुदाय में सेवा देने के कार्यों से अपने को जोड़ सके, इसके लिये अपने आपको तैयार कर लेना चाहिये, क्योंकि समुदाय– निर्माण की प्रक्रिया वहीं चल रही है और जिस सेवा–भाव से वे विश्व केन्द्र में काम कर रहे हैं उसी भाव से अपने समुदाय में सेवा के कार्य वे करते रहें। कुछ मित्रों ने अपने विचार साझा करते हुये बतलाया कि वे किस प्रकार सेवा के लिये अपने आपको विश्व केन्द्र में तैयार कर रहे हैं। हाल ही मित्रों ने यह निश्चय किया है कि वे नियमित रूप से (महीने में एक बार) पवित्र समाधियों पर जायेंगे और अपने समुदायों के विकास के लिये प्रार्थनायें करेंगे, उनके लिये प्रार्थना करेंगे जो समुदाय–निर्माण के कार्यों में लगे हैं। इसके लिये विश्व केन्द्र में एक ईमेल– prayerrequests19@gmail.com भी बनाया गया है, जिसके माध्यम से प्रार्थनाओं के लिये निवेदन भी किया जा सकता है।



बहाई विश्व केन्द्र में आयोजित बैठक में भाग लेने वाले प्रतिभागी

बिहार में 'प्राथमिक शिक्षा में समुदाय की भूमिका' विषय पर व्याख्यान का आयोजन

पृष्ठ 2 का शेष

परिचायक है। उन्होंने शिक्षा को भारतीय संस्कृति के अनुकूल होने पर बल देते हुए कहा कि प्राथमिक शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए सरकारी और गैर–सरकारी संगठन को साझी–समझ विकसित करनी होगी।

मंच संचालक शिक्षाविद् श्री भैरवलाल दास ने कहा कि बच्चे 15–20 प्रतिशत ज्ञान स्कूल में अर्जित करते हैं जबकि 80 प्रतिशत वे समुदाय से ही सीखते हैं। गुरुकुल परंपरा के दौरान भी समुदाय की अहम् भूमिका रही है, किन्तु विडंबना यह है कि सम्प्रति, शिक्षा के क्षेत्र में समुदाय की भूमिका नगण्य होती जा रही है अतएव, इसके लिए अनुकूल वातावरण विनिर्मित किये जाने की परमावश्यकता है।

अंत में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सेवानिवृत आई. ए. एस. श्री विजय प्रकाश ने वर्तमान शिक्षा की गुणवत्ता पर चोट करते हुए कहा कि आज स्थिति यह है कि जो जितनी अधिक उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं, वे उतने ही ज्यादा बेरोजगार हैं अतएव, उन्होंने समकालीन परिस्थिति के अनुसार शिक्षा की बात करते हुए बच्चों को नए परिवेश के लिए तैयार करने पर बल दिया तथा कहा कि यद्यपि विभिन्न कालखण्ड में जो विद्यालय खोले गए वे कुछ ख़ास संवर्ग के लिए जिसका उद्देश्य सीमित था तथापि आज विद्यालय समुदाय के सभी वर्गों के लिए खोल दिए गए हैं। दूसरी बात कि सिर्फ स्कूल में ही पढ़ाई होती है, ये अवधारणाएँ अब बदल गई है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने कहा कि सम्प्रति स्कूल में मात्र भाषा और विज्ञान की पढ़ाई होती है जिसके कारण इससे इतर क्षेत्र में रुझान रखने वाले छात्र जीवन के दौर में असफल हो जाते हैं। अतएव, आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा तकनीकी से प्रारंभ हो और फिर कला की ओर अग्रसर हो। अस्तु, सकारात्मक एवं उद्देश्यपूर्ण शिक्षा प्रणाली को आत्मसात् किया जाना वक्त की अहम् जरूरत है। उन्होंने प्रत्येक अवसर पर बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में रहने तथा एकाग्रता के लिए क्रीड़ा की महत्ता पर बल दिया।

इस अवसर पर 'सोसाइटी ऑफ़ यूनिवर्सल लर्नर' की वार्षिक पत्रिका ''आरंभि'' का भी विमोचन किया गया और अंत में संगठन सचिव श्री सच्चिदानंद पटेल ने समागत लोगों का धन्यवाद ज्ञापन किया। मौके पर बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के सैकड़ों बहाई मित्रगण उपस्थित थे।

रोड़ू में प्रभुधर्म का संदेश

दस घंटे की लम्बी यात्रा तय कर पाँच मित्रों की एक टोली हिमाचल प्रदेश के एक छोटे–से कस्बे रोड़ु में प्रभुधर्म का संदेश देने पहुँची। इस टोली में तीन वयस्क मित्रों के अलावा दो बच्चे सोभाऊ और सानिध्य भी थे।

रोड़ु पहुँचकर टोली के सदस्य स्थानीय बहाई मित्र जोधा राम से मिले, जो उनके रहने–खाने और संदेश देने के स्थान की व्यवस्था पहले ही कर चुके थे।

सभा–स्थल पर कोई 25 लोगों को विनोद छेत्री ने सम्बोधित करते हुये कहा कि ईश्वर का धर्म प्रगतिशील है, हर युग में ईश्वर अपना संदेशवाहक भेजता है जो अधर्म का नाश कर धर्म की पुनर्स्थापना करता है, हर धर्म अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखता है, लेकिन समान उद्देश्य से प्रेरित होता है। इस अर्थ में बहाई धर्म एक स्वतंत्र विश्व धर्म होने के साथ–साथ विभिन्न प्रकटीकरणों की अधुनातन कड़ी है। बहाउल्लाह की विश्व–व्यवस्था की चर्चा करते हुये विनोद छेत्री ने कहा कि विश्व–सभ्यता को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से ही बहाउल्लाह ने विश्व–एकता का संदेश दिया। अन्य बहाई विषयों पर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर भी दिये गये।

इस शिक्षण–दल ने रेड़ु में एक सक्रिय बहाई समुदाय की स्थापना के लिये अनेक सम्भावनाओं को खोज निकाला है जिन पर वे भविष्य के कार्य करेंगे।



मित्रगण बैठक के दौरान चर्चा करते हुए

कुल पृष्ठ संख्या–4

बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचारपत्र
रजि नं. : DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2015-16-17
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2015-16-17
प्रकाशक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1

मुद्रक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1
मुद्रण स्थान : डोरा ऑफसेट, सी–54, ओखला इंडस्ट्रीयल इस्टेट, फेज़–1, नई दिल्ली–20
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at CPSO New Delhi on 10/11.08. 2017
Sender's Address:
6,Shrimant Madhavrao Scindia Marg. New Delhi - 110 001 - INDIA

स्वामी, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो सोसायटीज एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है, के लिए प्रकाशक, मुद्रक : सुशील कुमार के द्वारा डोरा ऑफसेट, सी–54, ओखला इंडस्ट्रीयल इस्टेट, फेज़–1, नई दिल्ली–110 020 से मुद्रित एवं बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–110 001 से प्रकाशित (सम्पादक : सुशील कमार)